

एक युवा को जिंदगी में क्या करना, उसी उलझन में था। लक्ष्य सिद्धि के लिए जैसे-जैसे पढ़ता गया, जैसे-वैसे उसकी दुविधा बढ़ती गई। जिंदगी आखिर में है क्या? एक लक्ष्य निर्धारित करके उसके प्रति तन-मन-धन से समर्पित होना। ज्यादातर लोग क्या करना, और क्या नहीं करना, उसी उलझन में उलझे रहते हैं। जीवन, ये कोई समस्या नहीं, समस्या का निराकरण खोज, लक्ष्य सिद्धि से परितुष्ट होने का अवसर है। गहरे पानी में बिना जाये न तो तैराक ही बन सकता, न ही मोती का सोधकार। 'जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ'। ये बात तीरे खड़े रह तमाशा देखने से समझ आये। गहरी नदी या गहरे सागर की लहरें देख डरने वाले कभी किनारे नहीं पहुंच सकते। कवि हरिवंश राय बच्चन ने ठीक ही कहा है कि 'तीर पर कैसे रुकूं मैं, आज लहरों में नियंत्रण'। बिना चुनौतिपूर्ण जीवन, ये तो मलाले लोगों को ही भाता है, मर्द को नहीं। जीवन का एक निश्चित लक्ष्य निर्धारित कर, परमात्मा द्वारा दी हुई तमाम



जीवन का निश्चित लक्ष्य निर्धारित कर, परमात्मा द्वारा दी हुई तमाम शक्तियों का उसमें प्रयोजन कर, उस ध्येय को सिद्ध करना, ये उत्तम मार्ग है।

1. कंसिव:- कंसिव, यानी कि नये विचार को धारण करना। बासी मन नये विचार को धारण नहीं कर सकता। इसलिए मन को तरोताजा रख, नया-नया चिंतन करते रहो। इस चिंतन में से ही

2. लक्ष्य सिद्धि या ध्येय सिद्धि का दूसरा सोपान 'पर्सिव'। जिसका अर्थ है, आये हुए नये विचार को अच्छी तरह से समझना, उसके प्रति जानना, उसकी सत्यता की प्रतीति करना।

नहीं लेकिन गम्भीर मानसिक कसरत है। क्योंकि अपनी जिंदगी का नक्शा उससे ही बनता है। जीवन, ये एक कोरी स्लेट है, वो सिर्फ लकीरें खींचने के लिए नहीं, पर स्वर्णिम अक्षरों से व श्रद्धा से लेख

मूल्यांकन करना पड़े, उसको एनालाइज करना पड़े। जो मिला है, वो हितकारक, सर्व जन के लिए कल्याण कारक और शुद्ध इरादे से प्राप्त हुआ है। उसका मूल्यांकन करना पड़े। रिसीव का मतलब संतुष्ट होकर बैठ जाना, आराम करना नहीं है। लेकिन जो कुछ मिला है, उसके प्रति वैचारिक सजगता से साथ गढ़ते हुए उसका दिशा-दर्शन है। जो कुछ मिला है, उसे चेक करें, कसौटी करें, रुकें और उसके बाद सफलता के लिए आगे बढ़ें। महात्मा गांधी का 'क्विट इंडिया' का सूत्र अंग्रेजों को ललकारने के प्रबल सूत्र पर आधारित था। जो कि मिले हुए शुद्ध विचार व साधन के प्रयोग का परिणाम था। इस तरह आत्म-दर्शन करना, ये रिसीव हमें सलाह देती है।

4. अचीव: अचीव यानी कि सफलता पूर्वक प्राप्त करना। जो मिला है, वो आपकी सोच के अनुरूप है या उसके विरुद्ध है उसपर सोचना। जो सफलता आपको मिली है उसपर चिंतन करना और देखना कि कोई अर्धसफलता है या पूर्णसफलता है। और फिर आगे प्रयत्न चालू रखना। सिद्धि, ये एक प्लैग-स्टेशन है और महासिद्धि, ये एक जंक्शन है। प्लैग-स्टेशन पर सब गाड़ियां रुकती नहीं, लेकिन जंक्शन पर अनेक गाड़ियों का संगम होता है। और आप अपेक्षित गाड़ी में सवार होकर जरूरी स्थान तक पहुंच सकते हैं। जीवन, ये निरंतर यात्रा है। जो कि किसी को पड़े रहने नहीं देती। पड़े रहना यानी कि पतन के मार्ग को निमंत्रण देना है। इस तरह लक्ष्य सिद्धि के चार सोपान हैं।

कंसिव यानी कि नया विचार मन में धारण करना। पर्सिव यानी कि मन में धारण किये हुए विचार की समझ, उसकी अवेयरनेस रखना और उसका स्वरूप आत्मसात करने के लिए सावधानी रखना। रिसीव यानी जो मिला हुआ है, उसका विश्लेषण करना और उसकी शुद्धता की जांच करना। अचीव यानी कि सफलता पूर्वक प्राप्त करना।

जिंदगी की सफलता और लक्ष्य सिद्धि के चार आधार-स्तम्भ

शक्तियों का उसमें प्रयोजन करना, यह ध्येय सिद्धि करने का उत्तम मार्ग है। उस युवा को ध्येय सिद्धि करना है तो ध्येय सिद्धि के लिए चार स्तंभ क्रमबद्ध उसके लिये यत्न और प्रयत्न करना होगा। जीवन में गति और प्रगति का चार स्तंभ इस तरह है: **1. कंसिव, 2. पर्सिव, 3. रिसीव, 4. अचीव।**

नये विचार प्रस्फुटित होंगे। उन्हें समझने का प्रयत्न करें। साथ ही उनके प्रति मजबूत मनोबल गढ़ें। उन्हें आत्मसात करने का दृढ़ संकल्प करें। ये ध्येय प्राप्ति और लक्ष्य सिद्धि का प्रथम सोपान है। कंसिव, यानी इन विचारों में तन्मय रहें, एकाग्र रहें, प्रसन्न मन से नये विचार को अपनाएं।

मनुष्य के मन में प्रति मिनट तीस से चालीस विचार आते हैं। उनमें से सिर्फ एक या दो विचार ही श्रेष्ठता के लिए होते हैं। उन्हें नव-पल्लवित करें तो जीवन में खुशहाली, हरियाली आ जायेगी। जिससे मन पसंद जिंदगी पाने की सक्क्यता बढ़ जाती है। विचार करना, ये ऊपरछल्ले प्रयत्न

लिखने का साधन है। श्रद्धा, सत्य की ओर, श्रेष्ठ की तरफ गति कराती है। और श्रद्धा के साथ सुमेल साधकर, मन में आये हुए विचार की तरफ जाग्रत रहकर गढ़ें तो आप अपने सपनों को आगे दिशा दे सकते हैं। **3. रिसीव : रिसीव यानी कि प्राप्त करना।** मनुष्य को जो प्राप्त है, उसका



सारनाथ-वाराणसी(उ.प्र.)। देश की अग्रणी विद्युत कम्पनी पाँवरग्रीड के द्वारा आरकेडिया होटल स्थित सभागार में आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला 'नेक्स्ट इनिंस' में सभी का मार्गदर्शन करने के लिए ब्रह्माकुमारीज सारनाथ से मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. तापोशी बहन, वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. दीपेन्द्र भाई एवं ब्र.कु. विपिन भाई को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में पाँवरग्रीड के मुख्य प्रबंधक मानव संसाधन नीरज पाण्डेय, एच.आर. हेड विनोद जी, ब्र.कु. राधिका बहन, ब्र.कु. संदीप भाई सहित देशभर से आए वरिष्ठ अधिकारी एवं उनके परिवार शामिल रहे।



कुरुक्षेत्र-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज के विश्व शांति धाम सेवाकेन्द्र में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया दीपावली का त्योहार। इस दौरान स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरोज दीदी, ब्र.कु. लता बहन, ब्र.कु. राधा बहन सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे। इस अवसर पर भाई-बहनों द्वारा सुंदर नाटिका, नृत्य और गीत की प्रस्तुति दी गई।



फारबिसगंज-बिहार। ब्रह्माकुमारीज द्वारा जे.पी. मेमोरियल पब्लिक स्कूल में 'जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्त्व' विषय पर मुख्य वक्ता राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई ने छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को सम्बोधित किया। इस मौके पर डायरेक्टर अभय सिन्हा, स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र की ब्र.कु. रुक्मा बहन, ब्र.कु. श्याम भाई, ब्र.कु. आदित्य भाई, ब्र.कु. इंदु माता, सुमन बहन आदि उपस्थित रहे।



मिर्जापुर-उ.प्र.। 39वीं वाहिनी पीएसी के 43वें स्थापना दिवस समारोह में ब्रह्माकुमारीज को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। इस मौके पर डीएम आईएएस श्रीमती प्रियंका निरंजन, एसपी आईपीएस अभिनंदन जी, 39वीं वाहिनी पीएसी के कमांडेंट आईपीएस ब्र.कु. विकास कुमार वैद्य, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बिंदु बहन, होमगार्ड कमांडेंट बी.के. सिंह आदि मौजूद रहे। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज द्वारा आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन कर सभी को आध्यात्मिक ज्ञान एवं परमात्म संदेश दिया गया। डीएम एवं एसपी ने फीता काटकर प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। ब्र.कु. राजकन्या दीदी ने प्रदर्शनी समझाई। कार्यक्रम में लगभग 500 पुलिस के जवान मौजूद रहे।



रोहतक-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज रोहतक शीला बाईपास सेवाकेन्द्र पर राष्ट्रीय पत्रकारिता दिवस के अवसर पर आयोजित मीडिया सेमिनार में संजीव सैनी, डी.पी.आर.ओ, देवराज जी, प्रेसिडेंट ऑफ पेंशनर समिति, वरिष्ठ पत्रकार मनमोहन कथुरिया, ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. सुशांत भाई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रक्षा बहन, ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. कुसुम बहन, ब्र.कु. मोनिका बहन, ब्र.कु. वासुदेव भाई सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।